शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

Mein Sudharna Chahta Hun (Hindi)

मैं सुधरना चाहता हूं

जन्नत चाहिये या दोज़ख़ ? 2

बचपन के गुनाह को याद रखने का निराला अन्दाज़ 7

क़ियामत से पहले ह़िसाब 9

कभी ऊपर न देखूंगा 11

हथ-कड़ियां और बेड़ियां 14

मग़फ़िरत की तमन्ना कब ह़माक़त है ? 18

सुरमा लगाने के 4 म-दनी फूल 26

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المستطرف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मैं सुधरना चाहता हूं

येह रिसाला **(मैं सुधरना चाहता हूं)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मैं सुधरना चाहता हूं[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (27 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता महसूस फ़रमाएंगे ।**

निफ़ाक़ व नार से नजात

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सख़ावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : **सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सो बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है और क़ियामत के दिन उस को शहीदों के साथ रखेगा ।" (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص ٢٣٣ مؤسسة الريان بيروت)

है सब दुआ़ओं से बढ़ कर दुआ़ दुरूदो सलाम
कि दफ़्अ़ करता है हर इक बला दुरूदो सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी **मर्कज़ फ़ैज़ाने** मदीना (बाबुल मदीना) कराची में होने वाले 27वीं **र-मज़ानुल मुबारक** (1423 हि.) के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

जन्नत चाहिये या दोज़ख़ ?

इमाम अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی (मु-तवफ़्फ़ा 430 हिजरी) ''ह़िल्यतुल औलिया'' में नक़्ल करते हैं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम **तैमी** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मैं ने येह तसव्वुर बांधा कि मैं **जहन्नम** में हूं और आग की ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा, थूहर (या'नी ज़ह़रीला कांटेदार दरख़्त) खा रहा हूं और दोज़ख़ियों का पीप पी रहा हूं । इन तसव्वुरात के बा'द मैं ने अपने नफ़्स से इस्तिफ़्सार किया : बता, तुझे क्या चाहिये ? (जहन्नम का अ़ज़ाब या इस से नजात ?) नफ़्स बोला : (नजात चाहिये इसी लिये) ''मैं चाहता हूं कि दुन्या में वापस चला जाऊं और ऐसे अ़मल करूं जिस की वजह से मुझे इस दोज़ख़ से नजात मिल जाए ।'' इस के बा'द मैं ने येह ख़याल जमाया कि मैं **जन्नत** में हूं, वहां के फल खा रहा हूं, उस की नहरों से मश्रूब पी रहा हूं और ह़ूरों से मुलाक़ात कर रहा हूं । इन तसव्वुरात के बा'द मैं ने अपने नफ़्स से पूछा : तुझे किस चीज़ की ख़्वाहिश है ? (जन्नत की या दोज़ख़ की ?) नफ़्स ने कहा : (जन्नत की इसी लिये) ''मैं चाहता हूं कि दुन्या में जा कर नेक अ़मल कर के आऊं ताकि **जन्नत** की ख़ूब ने'मतें पाऊं'' तब मैं ने अपने नफ़्स से कहा : फ़िलह़ाल तुझे मोहलत मिली हुई है । (या'नी ऐ नफ़्स ! अब तुझे ख़ुद ही राह **मु-तअ़य्यन** करनी है कि **सुधर कर जन्नत में जाना है या बिगड़ कर दोज़ख़ में ! अब तू इसी ह़िसाब से अ़मल कर**)

(حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء، ج٤، ص٢٣٥ رقم ٥٣٦١ دار الكتب العلمية بيروت)

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ! ज़िन्दगी का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आख़िरत की तय्यारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा समझने की कोशिश कीजिये कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن किस त़रह़ अपने **नफ़्स को सुधारने** के लिये उस का **मुह़ा-सबा** कर के, उसे क़ाबू करने की कोशिश फ़रमाते नीज़ कोताहियों पर उस की सर-ज़निश (या'नी इस को डांट डपट) करते बल्कि बा'ज़ अवक़ात इस के लिये सज़ाएं भी **मुक़र्रर** फ़रमाते, हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ाइफ़ रह कर ख़ुद को ज़ियादा से ज़ियादा **सुधारते हुए** आख़िरत की तय्यारी के लिये कोशां रहते। बेशक ऐसों ही की कोशिश ठिकाने भी लगती है। कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल**, आयत नम्बर 19 में **अल्लाहु रब्बुल इ़बाद** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَ مَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَ سَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَ هُوَ
مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىِٕكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾

मेरे आक़ाए ने'मत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, पीरे त़रीक़त, आ़लिमे शरीअ़त, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने शोह्रए आफ़ाक़ तर-ज-मए कुरआन **कन्ज़ुल ईमान** में इस का तरजमा यूं फ़रमाते हैं : और जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी।

रोशन मुस्तक़्बिल

आज हमारी ह़ालत येह है कि अपनी ''दुन्यवी कल'' (या'नी मुस्तक़्बिल) की सुधार के लिये तो बहुत ग़ौरो फ़िक्र करते, उस के लिये त़रह़ त़रह़ की आसाइशें जम्अ़ करने की हर दम सअ़ूय करते, ख़ूब बेंक बेलेन्स बढ़ाते, कारोबार चमकाते और आयन्दा की दुन्यवी राह़तों के ह़ुसूल की ख़ात़िर न जाने क्या क्या मन्सूबे बनाते हैं कि किसी त़रह़ हमारी येह ''दुन्यवी कल'' बेहतर हो जाए, हमारा दुन्यवी मुस्तक़्बिल संवर जाए, लेकिन अफ़्सोस ! हम अपनी ''उख़्रवी कल'' (या'नी आख़िरत) को **सुधारने** की फ़िक्र से यक्सर ग़ाफ़िल और उस की तय्यारी के मुआ़-मले में बिल्कुल काहिल हैं । ह़ालां कि सिर्फ़ इस दुन्यवी कल के **सुधरने** का इन्तिज़ार करने वाले न जाने कितने नादान इन्सानों की आहे ह़सरत मौत की हिचकियों से हम-आग़ोश हो जाती है और वोह रोशन मुस्तक़्बिल पा कर ख़ुशियां मनाने के बजाए **अंधेरी क़ब्र** में उतर कर क़ब्रे अफ़्सोस में जा पड़ते हैं । फ़क़त़ दुन्यवी ज़िन्दगी सुधारने के तफ़क्कुरात में **मुस्तग़रक़** हो कर इसी के लिये मसरूफ़े तगो दौ रहना, अपनी आख़िरत की भलाई के लिये फ़िक्रो अ़मल से ग़फ़्लत बरत्ना, साबिक़ा आ'माल पर अपना एह़तिसाब करते हुए आयन्दा गुनाहों से बचने और नेकियां करने का अ़ज़्म न करना सरासर नुक़्सान व ख़ुसरान है और समझदार वोही है जिस ने ह़िसाबे आख़िरत को पेशे नज़र रखते हुए ख़ुद को सुधारने के लिये अपने नफ़्स का सख़्ती से **मुह़ा-सबा** किया, गुनाहों पर अफ़्सोस और इन के बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ महसूस किया । जैसा कि हमारे अस्लाफ़ का त़र्ज़े अ़मल रहा । चुनान्चे

अनोखा हिसाब

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं कि **ह़ज़रते सय्यिदुना इब्नुस्सिम्मा** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الله ने एक बार अपना मुह़ा-सबा करते हुए अपनी उ़म्र शुमार की तो वोह (तक़्रीबन) **साठ बरस** बनी। उन साठ बरसों को बारह से ज़र्ब देने पर **सात सो बीस** महीने बने। सात सो बीस को मज़ीद तीस से मज़रूब (या'नी मल्टी प्लाय) किया तो ह़ासिले ज़र्ब **इक्कीस ह़ज़ार छ सो** आया। जो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मुबारक उ़म्र के अय्याम थे। फिर अपने आप से मुख़ातिब हो कर फ़रमाने लगे : अगर मुझ से रोज़ाना एक गुनाह भी सरज़द हुवा हो तो अब तक इक्कीस हज़ार छ सो गुनाह हो चुके ! जब कि इस मुद्दत में ऐसे अय्याम भी शामिल होंगे जिन में यौमिय्या एक हज़ार तक भी गुनाह हुए होंगे। येह कहना था कि **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से लरज़ने लगे ! फिर यकायक **एक चीख़** उन के मुंह से निकल कर फ़ज़ा की पहनाइयों में गुम हो गई और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। देखा गया तो ताइरे रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुका था। (کیمیائے سعادت ج۲ ص۸۹۱، تهران)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एह़सासे नदामत है न ख़ौफ़े आ़क़िबत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का अन्दाज़े "**फ़िक्रे मदीना**[1]" किस क़दर आ'ला था

1 : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में अपने मुह़ा-सबे को "फ़िक्रे मदीना" कहते हैं।

और वोह किस त़रह़ नफ़्स को सुधारने के लिये इस का **मुह़ा-सबा** फ़रमाते और हर दम नेकियों में मसरूफ़ रहने के बा वुजूद ख़ुद को गुनहगार तसव्वुर करते और हमेशा **अल्लाह** तआ़ला से डरते रहते यहां तक कि फ़र्ते ख़ौफ़ से बा'ज़ों की रूहें परवाज़ कर जातीं । मगर अफ़्सोस ! हमारी ह़ालत येह है कि शबो रोज़ गुनाहों के समुन्दर में ग़र्क़ रहने के बा वुजूद **एह़सासे नदामत** है न **ख़ौफ़े आ़क़िबत** । हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى शब बेदारियां करते, कसरत से रोज़े रखते, कसीर आ'माले ख़ैर बजा लाते मगर फिर भी ख़ुद को कम तरीन ख़याल करते हुए **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से गिर्या कनां रहते ।

रातीं ज़ारी कर कर रोंदे, नींद अखीं दी धोंदे
फ़ज़्रीं ओ गन्हार कहांदे, सब थीं नीवीं होंदे

(या'नी वोह ऐसे नेक बन्दे हैं जिन की रातें गिर्या व ज़ारी करते गुज़रती हैं जिस के सबब उन की नींदें उड़ जाती हैं इस के बा वुजूद जब सुब्ह़ होती है तो लोगों के सामने अपने आप को सब से बढ़ कर गुनाहगार तसव्वुर करते हैं)

इन की शान तो येह है कि वोह **मुस्तह़ब्बात** के तर्क को भी अपने लिये **सय्यिआत** (या'नी बुराइयों) में से जानते, नफ़्ली इबादात में कमी को भी जुर्म तसव्वुर करते और बचपन की ख़त़ा को भी गुनाह शुमार करते ह़ालां कि ना बालिग़ी के गुनाह महसूब (शुमार) नहीं किये जाते । चुनान्चे

बचपन की ख़त़ा याद आ गई !

एक मर्तबा **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बह ग़ुलाम** عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ السَّلَام एक मकान के पास से गुज़रे तो कांपने लगे और पसीना आ गया ! लोगों

के इस्तिफ़्सार पर फ़रमाया : येह वोह जगह है जहां मैं ने छोटी उ़म्र में **गुनाह** किया था ! (تَنبِیہُ الْمُغتَرِّین ص٥٧ دارالبشائر بیروت)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बचपन के गुनाह को याद रखने का निराला अन्दाज़

मन्कूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से बचपन में एक गुनाह सरज़द हो गया था । आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब भी कोई नया लिबास सिलवाते तो उस के गिरीबान पर वोह गुनाह दर्ज कर देते और अक्सर उस को देख कर इस क़दर गिर्या व ज़ारी करते कि आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर ग़शी तारी हो जाती । (تذکرۃ الاولیاء ج۱ص۳۹)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाक़िस नेकियों पर इतराना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللہُ الْمُبِین अपनी कमसिनी के **गुनाह** भी याद रखते और उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किस क़दर ख़ौफ़ मह़सूस करते और एक हम बद नसीबों की ह़ालत है कि बालिग़ होने के बा वुजूद क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) किये हुए **गुनाह** भी भूल जाते और नक़ाइस से भरपूर नेकियों को

याद रख कर उन पर इतराते रहते हैं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी कर के भूल जाओ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़क़्ल मन्द वोही है जो नेकियों के हुसूल की सआदत पा कर उन्हें भूल जाए और गुनाह सादिर हो जाएं तो उन्हें याद रखे और **ख़ुद को सुधारने** के लिये उन पर सख़्ती से अपना मुह़ा–सबा करता रहे । बल्कि नेक आ'माल में कमी पर भी ख़ुद को सर–ज़निश (या'नी डांट डपट) करे और हर लम्ह़ा ख़ुद को **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से डराता रहे । येही हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का मा'मूल रहा है । चुनान्चे

आज ''क्या क्या'' किया ?

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रोज़ाना अपना एह़तिसाब फ़रमाया करते, और जब रात आती तो अपने पाउं पर दुर्रा मार कर फ़रमाते : बता, आज तूने **''क्या क्या''** किया है ? (احیاءُ العُلوم ج٥ ص١٤١ دار صادر بیروت)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की आ़जिज़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अ़–श–रए मुबश्शरह या'नी जिन दस सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم اَجْمَعِيْن को ताजदारे

रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत की बिशारत सुनाई उन में शामिल और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के बा'द सब से अफ़्ज़ल होने के बा वुजूद बहुत इन्किसारी फ़रमाया करते थे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक बार मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को एक बाग़ की दीवार के क़रीब देखा कि वोह अपने नफ़्स से फ़रमा रहे थे : "**वाह !** लोग तुझे अमीरुल मुअमिनीन कहते हैं (फिर बत़ौरे आ़जिज़ी फ़रमाने लगे) और तू (तो वोह है कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता ! (याद रख !) अगर तूने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ नहीं रखा तो उस के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाएगा।" (کیمیائے سعادت ج۲ ص۸۹۲ تہران)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का इस त़रह़ अपने नफ़्स को मलामत करना, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दिला कर उस का **मुह़ा-सबा** करना हमारी ता'लीम के लिये भी था। चुनान्चे

क़ियामत से पहले ह़िसाब

एक मौक़अ़ पर सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ लोगो !** अपने आ'माल का इस से पहले **मुह़ा-सबा** कर लो कि क़ियामत आ जाए और उन का ह़िसाब लिया जाए।"

(اِحیاءُ الْعُلُوم ج۵ ص۱۲۸)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मुह़ा-सबा किसे कहते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने साबिक़ा आ'माल का ह़िसाब करना **मुह़ा-सबा** कहलाता है । काश ! रोज़ाना रात **''फ़िक्रे मदीना**[1]**''** करते हुए हमें अपने नफ़्स के साथ तमाम दिन का ह़िसाब करने की सआ़दत मिल जाया करे और यूं हमें सरमायए आ'माल में नफ़्अ़ व नुक़्सान की मा'लूमात होती रहे । जिस त़रह़ शरीके तिजारत से ह़िसाब लेने में भरपूर कोशिश की जाती है इसी त़रह़ नफ़्स के साथ भी ह़िसाब किताब में बहुत ज़ियादा एह़तियात़ ज़रूरी है क्यूं कि नफ़्स बहुत चालाक और ह़ीलासाज़ है येह हमें अपनी सरकशी भी इत़ाअ़त के लिबास में पेश करता है ताकि बुराई में भी हमें नफ़्अ़ नज़र आए ह़ालां कि इस में सरासर नुक़्सान है । सिर्फ़ येही नहीं बल्कि सह़ीह़ मा'नों में सुधरने के लिये तमाम जाइज़ उमूर में भी नफ़्स से ह़िसाब त़लब करना चाहिये । अगर इस में हमें नफ़्स का क़ुसूर नज़र आए तो उस से सख़्ती के साथ कमी पूरी करवानी चाहिये । जैसा कि हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی का अ़मल रहा । चुनान्चे

1 : ख़ुद को सुधारने के बेहतरीन नुस्ख़े ''म-दनी इन्आ़मात'' में से एक म-दनी इन्आ़म **''फ़िक्रे मदीना''** भी है । या'नी रोज़ाना रात को अपने आ'माल का मुह़ा-सबा करे और इस दौरान म-दनी इन्आ़मात का रिसाला भी पुर करे ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (ترغیب و ترہیب)

चराग़ पर अंगूठा

बहुत बड़े आ़लिम और ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना **अह़नफ़ बिन क़ैस** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रात के वक़्त **चराग़** हाथ में उठा लेते और उस की लौ पर अंगूठा रख कर इस त़रह़ फ़रमाते **: ऐ नफ़्स !** तूने फ़ुलां काम क्यूं किया ? और फ़ुलां चीज़ क्यूं खाई ? (کیمیائے سعادت ج۲ ص ۸۹۳ تهران)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

या'नी अपना **मुह़ा-सबा** करते कि अगर मेरे नफ़्स ने ग़-लत़ी की हो तो उस को **तम्बीह** हो कि येह चराग़ की लौ जो कि बहुत ही हलकी आग है फिर भी जब ना क़ाबिले बरदाश्त है तो भला जहन्नम की भयानक आग सहना क्यूंकर मुम्किन होगा ! **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی इस त़रह़ की एक और **ह़िकायत** नक़्ल करते हुए फ़रमाते हैं **:**

कभी ऊपर न देखूंगा

ह़ज़रते सय्यिदुना **मज्मअ़** नामी एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक मर्तबा ऊपर की त़रफ़ देखा तो एक छत पर मौजूद किसी औ़रत पर नज़र पड़ गई । फ़ौरन निगाह झुका ली और इस क़दर पशेमान हुए कि अ़ह्द कर लिया "आयन्दा कभी भी ऊपर न देखूंगा ।"

(احیاء العلوم ج۵ ص ۱۴۱ دار صادر بیروت)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आंख उठती तो मैं झुंजुला के पलक सी लेता
दिल बिगड़ता तो मैं घबरा के संभाला करता

(ज़ौक़े ना'त)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया कि हमारे अस्लाफ़ की कैसी **म-दनी सोच** हुवा करती थी कि ग़-लती से नज़र ना महरम पर जा पड़ी और अचानक पड़ जाने वाली नज़र मुआ़फ़ होने के बा वुजूद भी उन्हों ने कभी ऊपर न देखने का अ़ह्द कर लिया या'नी मुस्तक़िल आंखों का "**क़ुफ़्ले मदीना**" लगा लिया ।[1]

आक़ा की ह़या से झुकी रहती नज़र अक्सर
आंखों पे मेरे भाई लगा क़ुफ़्ले मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अगर जन्नत से रोक दिया गया तो !

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم एक मर्तबा ग़ुस्ल फ़रमाने के लिये किसी ह़म्माम पर गए । **ह़म्मामी** ने आप को रोक कर दिरहम (या'नी रुपै) त़लब कर लिये । और कह दिया कि अगर दिरहम अदा न करेंगे तो दाख़िल न होने दूंगा । उस के येह कहने पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रोना शुरूअ़ कर दिया । ह़म्मामी ने परेशान हो कर अ़र्ज़ की : अगर आप के पास दिरहम नहीं हैं तो कोई बात नहीं, आप वैसे ही

1 : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में बोली जाने वाली इस्त़िलाह़ "क़ुफ़्ले मदीना" की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का तह़रीरी बयान "क़ुफ़्ले मदीना" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये । **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

ग़ुस्ल फ़रमा लीजिये । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं इस वजह से नहीं रोया कि आप ने मुझे रोक दिया है बल्कि मुझे तो इस बात ने रुला दिया कि दिरहम न होने की वजह से आज मुझे ऐसे ह़म्माम में जाने से रोक दिया गया है जिस में नेकूकार व गुनहगार सभी नहाते हैं । आह ! अगर नेकियां न होने की बिना पर कल मुझे उस जन्नत से रोक लिया गया जो सिर्फ़ नेकों का मक़ाम है, तो मेरा क्या बनेगा ! **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के वाक़िआ़त हैं जो परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के परहेज़ गार बन्दे हैं, जिन के सरों पर **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त तबा-र-क व तआ़ला** ने विलायत के ताज सजाए हैं । मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये कि वोह **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ब-ईं हमा शरफ़ व मर्तबत (या'नी विलायत जैसा अ़ज़ीम मर्तबा ह़ासिल होने के बा वुजूद) किस त़रह़ नफ़्स को सुधारने के लिये उस का **मुह़ा-सबा** फ़रमाते और ख़ुद को आ़जिज़ो गुनहगार तसव्वुर करते । काश ! हम भी **सुधरने का जज़्बा** रखते हुए अपना **मुह़ा-सबा** कर पाते और जीते जी अपने आ'माल का जाएज़ा लेने में काम्याब हो जाते । गुज़श्ता **ह़िकायत** से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे दुन्यवी मुसीबत को यादे आख़िरत का ज़रीआ़ बनाते थे । इस ज़िम्न में एक और **ह़िकायत** समाअ़त फ़रमाइये । चुनान्चे

हथ-कड़ियां और बेड़ियां

मुफ़स्सिरे कुरआन, **साहिबे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरिल कुरआन,** ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى अपनी मश्हूर किताब "सवानेह़े करबला" के **सफ़ह़ा** नम्बर 60 पर फ़रमाते हैं : ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के दौर में दूसरी बार **ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को क़ैद किया गया और लोहे की भारी ज़न्जीरों में आप का तने नाज़नीन जकड़ लिया गया और पहरेदार **मु-तअ़य्यन** कर दिये गए । मश्हूर मुह़द्दिस ह़ज़रते **सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ाज़िर हुए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़ालते ज़ार देख कर रो पड़े और अपने जज़्बाते क़ल्बी का इज़्हार करते हुए अ़र्ज़ गुज़ार हुए : आह ! येह कैफ़िय्यत मुझ से देखी नहीं जा रही ऐ काश ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बदले यहां मैं इस त़रह़ क़ैद होता ! येह सुन कर जनाबे इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "आप समझते हैं इस क़ैदो बन्द की वजह से मैं इज़्ति़राब में हूं, ह़क़ीक़त येह है कि अगर मैं चाहूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से अभी आज़ाद हो जाऊं मगर इस सज़ा पर **सब्र** में अज्र है । इन बेड़ियों और ज़न्जीरों की बन्दिशों में जहन्नम की ख़ौफ़नाक आ-तशीं ज़न्जीरों, आग की बेड़ियों और अ़ज़ाबे इलाही की याद है ।" येह फ़रमा कर बेड़ियों में से पाउं और हथ-कड़ियों में से हाथ निकाल दिये ! **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सांस की माला

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जल्दी करो ! जल्दी करो ! तुम्हारी ज़िन्दगी क्या है ? येह सांस ही तो हैं कि अगर येह रुक जाएं तो तुम्हारे उन आ'माल का सिल्सिला मुन्क़ते़अ् हो जाए जिन से तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करते हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़्म फ़रमाए उस शख़्स पर जिस ने अपने आ'माल का जाएज़ा लिया और अपने गुनाहों पर कुछ आंसू बहाए।"

(اتحاف السادة المتقين ج١٤ ص ٧١ دار الكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बे अ़मल बे वुक़ूफ़ होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये कि हम तो सर ता पा गुनाहों में डूबे हैं, आख़िर कौन सा गुनाह ऐसा है जो हम नहीं करते ? नेकियां हम से नहीं हो पातीं और अगर हो भी जाएं तो **इख़्लास** का दूर दूर तक कोई पता नहीं होता, लोगों को अपने नेक आ'माल सुना कर रियाकारी की तबाहकारी का शिकार हो जाते हैं, हमारा नामए आ'माल नेकियों से ख़ाली और गुनाहों से पुर होता जा रहा है। लेकिन अफ़्सोस ! हमें इस के बुरे नताइज और **ख़ुद को सुधारने** का कोई एह़सास नहीं, और इस पर तुर्रा येह कि हम ख़ुद को बहुत **अ़क़्ल मन्द** गुमान करते हैं ह़त्ता कि अगर कोई हमें बे वुक़ूफ़ या कम अ़क़्ल कह दे तो उस के दुश्मन ही हो जाएं। लेकिन अब आप ही बताइये कि अगर किसी मफ़्रूर मुजरिम

की फांसी का हुक्म नामा जारी हो चुका हो, पोलीस उस को तलाश कर रही हो और वोह गिरिफ़्तारी से बे ख़ौफ़, राहे तह़फ़्फ़ुज़ व एह़तियात़ तर्क कर के आज़ादाना घूम रहा हो तो क्या उस को **अ़क़्ल मन्द** कहेंगे ? हरगिज़ नहीं ! ऐसे आदमी को लोग बे वुकूफ़ ही कहेंगे।

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिसे बता दिया गया हो कि "जिस ने क़स्दन **नमाज़** छोड़ी जहन्नम के दरवाज़े पर उस का नाम लिख दिया जाता है।" (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء ج۷ ص۲۹۹ رقم۱۰۵۹۰ دارالکتب العلمیة بیروت) और येह भी ख़बर दे दी गई हो कि "**जो** माहे र-मज़ान का एक **रोज़ा** भी बिला उ़ज़्रे शर-ई व मरज़ क़ज़ा कर देता है तो ज़माने भर के रोज़े उस की क़ज़ा नहीं हो सकते अगर्चे बा'द में रख भी ले।[1]" (سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج ۲ ص ۱۷۵ حدیث ۷۲۳ دارالفکر بیروت) और येह भी ख़बर दे दी गई हो कि जो शख़्स **ह़ज** के ज़ादे राह (अख़राजात) और सुवारी पर क़ादिर हो जो उसे **बैतुल्लाह** तक पहुंचा दे, इस के बा वुजूद **ह़ज** न करे वोह चाहे यहूदी हो कर मरे या ईसाई हो कर। (سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج۲ ص۲۱۹ حدیث ۸۱۲) अगर तुम ने **वा'दा ख़िलाफ़ी** की तो याद रखो ! जो वा'दा ख़िलाफ़ी करता है उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और लोगों की ला'नत है और उस के न फ़र्ज़ क़बूल किये जाएंगे न नफ़्ल (صحیح البخاری ج۱ص۶۱۶ حدیث ۱۸۷۰ دار الکتب العلمیة بیروت) अगर तुम ने **बद**

---

1 : या'नी बिला वजह र-मज़ान में एक रोज़ा भी न रखने वाला उस के इ़वज़ उ़म्र भर रोज़ा रखे, तो वोह द-रजा और सवाब न पाएगा जो र-मज़ान में रखने से पाता अगर्चे शरअ़न एक रोज़े से उस की क़ज़ा हो जाएगी अदाए फ़र्ज़ और है द-रजा पाना कुछ और।
(मिरआत, जि. 3, स. 167)

निगाही की, किसी ना महरम औरत को देखा या अम्रद को ब नज़रे शह्वत देखा या T.V., VCR, इन्टरनेट और सिनेमा घर वग़ैरा पर फ़िल्में, डिरामे और बे ह़याई से पुर मनाज़िर देखे तो याद रखो ! मन्क़ूल है : जिस ने अपनी आंख ह़राम से पुर की **अल्लाह** तआ़ला बरोज़े क़ियामत उस की आंख में आग भर देगा। और जिसे येह समझा दिया गया हो कि अ़न्क़रीब तुम्हें मरना पड़ेगा क्यूं कि हर जान को **मौत** से हम-कनार होना है जब वक़्त पूरा हो जाएगा तो फिर मौत एक पल आगे होगी न पीछे। और येह भी इत्तिलाअ़ दे दी गई हो कि मरने के बा'द उस **क़ब्र** में जाना है जो मुजरिमों पर तारीक और वह्शत नाक होती है, उन के लिये **कीड़े मकोड़े और सांप** बिच्छू भी होते हैं और उस में हज़ारों साल रहना होगा। **आह ! क़ब्र** हर एक को दबाएगी, नेकों को ऐसे दबाएगी जैसे मां बिछड़े हुए लाल को शफ़्क़त के साथ सीने से चिमटा लेती है और जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है उन को ऐसे भींचेगी कि **पस्लियां टूट फूट कर** एक दूसरे में इस त़रह़ पैवस्त हो जाएंगी जिस त़रह़ दोनों हाथों की उंग्लियां एक दूसरे में मिल जाती हैं। इसी पर इक्तिफ़ा नहीं बल्कि इस बात से भी **मु-तनब्बेह** या'नी ख़बरदार कर दिया गया हो कि **क़ियामत का एक दिन पचास हज़ार साल के बराबर होगा,** और सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, ह़िसाब किताब का सिल्सिला होगा, नेकों के लिये **जन्नत** की राह़तें और मुजरिमों के लिये **जहन्नम** की आफ़तें होंगी।

नादानी की इन्तिहा

इतना कुछ मा'लूम होने के बा वुजूद अगर कोई शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कमा ह़क़्क़ुहू न डरे । मौत की सख़्तियों, **क़ब्र** की वह़्शत नाकियों, **क़ियामत** की होल नाकियों और **जहन्नम** की सज़ाओं का सह़ीह़ मा'नों में ख़ौफ़ न रखे, ग़फ़्लत की नींद सोता रहे, **नमाज़ें** न पढ़े, **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े न रखे, फ़र्ज़ होने की सूरत में भी अपने माल की **ज़कात** न निकाले, फ़र्ज़ होने के बा वुजूद **ह़ज** अदा न करे, **वा'दा ख़िलाफ़ी** उस का वतीरा रहे, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी वग़ैरा तर्क न करे, **फ़िल्मों डिरामों** का शाइक़ रहे, **गाने** सुनना उस का बेहतरीन मश्ग़ला रहे, **वालिदैन की ना फ़रमानी** करे, गालियां बकने और त़रह़ त़रह़ की बे ह़याई की बातों में मगन रहे अल ग़रज़ ख़ुद को बिल्कुल भी **न सुधारे** मगर फिर भी अपने आप को **अ़क़्ल मन्द** समझता रहे तो ऐसे शख़्स से बढ़ कर **बे वुक़ूफ़** और कौन होगा ? और बे वुक़ूफ़ी की इन्तिहा येह है कि जब **सुधारने** की ख़ातिर समझाया जाए तो ला परवाही से येह कह दे कि बस जी कोई बात नहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो रह़ीम व करीम है मेह्रबानी करेगा, वोह करम फ़रमा देगा ।

मग़्फ़िरत की तमन्ना कब ह़माक़त है ?

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **एह़याउल उ़लूम** में फ़रमाते हैं : ईमान के बीज को इबादत का पानी न दिया जाए या दिल को बुरे अख़्लाक़ से मुलव्वस छोड़ दिया जाए और दुन्यवी लज़्ज़त में मुन्हमिक हो जाए फिर **मग़्फ़िरत** का इन्तिज़ार करे तो उस का इन्तिज़ार एक बे वुक़ूफ़ और धोके में मुब्तला

शख़्स का इन्तिज़ार है। (اِحیاءُ عُلُومِ الدِّین ج٤ ص١٧٥،دار صادر بیروت) **नबिय्ये अकरम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आजिज़ (या'नी बे वुकूफ़) शख़्स वोह है जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात के पीछे चलाता है और (इस के बा वुजूद) **अल्लाह** तआला से आरज़ू रखे। (سُنَنُ التِّرمِذِی ج٤ ص٢٠٧-٢٠٨ حدیث٢٤٦٧ دار الفکر بیروت)

जव बो कर गन्दुम काटने की उम्मीद हमाक़त

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आली में आजिज़ से मुराद बे वुकूफ़ है। **कय्यिस** (या'नी अक़्ल मन्द) का मुक़ाबिल, नफ़्से अम्मारा से दबा हुवा या'नी वोह **बे वुकूफ़** है जो काम करे **दोज़ख़** के और उम्मीद करे **जन्नत** की, कहा करे कि **अल्लाह** ग़फ़ूरुर्रहीम है। **बाजरा** बोए और उम्मीद करे **गेहूं** काटने की ! कहा करे कि **अल्लाह** ग़फ़ूरुर्रहीम है। काटते वक़्त इसे गन्दुम बना देगा। इस का नाम उम्मीद नहीं। रब तआला फ़रमाता है : مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ (پ٣٠الانفطار٦) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुझे किस चीज़ ने फ़रेब दिया अपने करम वाले रब से) और फ़रमाता है : اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۱۸﴾ (پ٢ البقرة ٢١٨) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये अपने घरबार छोड़े और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में लड़े वोह रहमते इलाही के उम्मीद वार हैं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है) **जव** बो कर **गन्दुम** काटने की आस लगाना शैतानी धोका और नफ़्सानी वस्वसा है। ख़्वाजा हसन बसरी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی) फ़रमाते

हैं कि : बा'ज़ लोगों को झूटी उम्मीद ने सीधे राह नेक आ'माल से हटा दिया है जैसे झूटी बात गुनाह है ऐसे ही झूटी आस भी गुनाह है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 102, 103, اشعه ج٤ ص٢٥١، مرقات ج٩ ص١٤٢)

जहन्नम का बीज बो कर जन्नत की खेती का इन्तिज़ार !

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **एह़याउल उ़लूम** में नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे नज़्दीक सब से बड़ा धोका येह है कि मुआ़फ़ी की उम्मीद पर नदामत के बिग़ैर आदमी गुनाहों में बढ़ता चला जाए, इत़ाअ़त के बिग़ैर **अल्लाह** तआ़ला के क़ुर्ब की तवक़्क़ोअ़ रखे, जहन्नम का बीज डाल कर **जन्नत** की खेती का मुन्तज़िर रहे, गुनाहों के साथ इबादत गुज़ार लोगों के घर (जन्नत) का त़ालिब हो, अ़-मले ख़ैर के बिग़ैर जज़ाए ख़ैर का इन्तिज़ार करे और ज़ुल्मो ज़ियादती के बा वुजूद **अल्लाह** तआ़ला से नजात की तमन्ना करे । تَرْجُوالنَّجَاةَ وَ لَمْ تَسْلُكْ مَسَالِكَهَا اِنَّ السَّفِيْنَةَ لَا تَجْرِىْ عَلَى الْيَبَسِ- तुम नजात की उम्मीद रखते हो लेकिन इस के रास्तों पर नहीं चलते यक़ीनन कश्ती ख़ुश्की पर नहीं चलती । (احیاء العلوم ج٤ ص١٧٦)

मुसीबत बाइसे इब्रत है

याद रखिये ! अल्लाह तआ़ला बे नियाज़ है । उस की बे नियाज़ी को समझने की इस त़रह़ कोशिश कीजिये कि क्या दुन्या में आप को कोई तक्लीफ़ नहीं आती ? बुख़ार नहीं आता ? परेशानी लाह़िक़ नहीं होती ? तंगदस्ती, क़र्ज़दारी, बे रोज़गारी के मनाज़िर क्या आप ने कभी

नहीं देखे ? ह़ादिसात से वासित़ा नहीं पड़ा ? हाथों, पैरों या आंखों वग़ैरा से मा'ज़ूर नहीं देखे ? क्या दुन्या में तक्लीफ़ों के नज़्ज़ारात आप को जहन्नम के अ़ज़ाबात याद नहीं दिलाते ? यक़ीनन दुन्या की तकालीफ़ में अहले नज़र के लिये क़ब्रो आख़िरत और जहन्नम के अ़ज़ाबों की याद है । चुनान्चे याद रखिये ! वोह **रब्बे बे नियाज़** عَزَّوَجَلَّ जो दुन्या के अन्दर बन्दों को बीमारियों, तक्लीफ़ों और मुसीबतों में मुब्तला कर सकता है वोह **जहन्नम** का अ़ज़ाब भी दे सकता है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रोज़ी देने वाला है फिर भी.....

इस बात पर ज़रा ग़ौर फ़रमाइये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रोज़ी देने वाला है और बिग़ैर वसीले के भी रोज़ी देने पर क़ादिर है येह आप का भी ईमान है और मेरा भी । हां हां उस ने हर एक की रोज़ी अपने ज़िम्मए करम पर ली हुई है जैसा कि बारहवें पारे की इब्तिदाई आयत में इर्शाद है : وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़मीन पर चलने वाला कोई (जानदार) ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के ज़िम्मए करम पर न हो ।

फिर सोचने की बात है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने रोज़ी का ज़िम्मा ले लिया है तो आख़िर क्यूं रिज़्क़ के लिये भागदौड़ करते हैं ? क्यूं एक शह्र से दूसरे शह्र जाते और वत़न से बे वत़न होते और "राहे माल" में आने वाली हर तक्लीफ़ हंसी ख़ुशी बरदाश्त करते हैं, इस लिये कि आप का ज़ेह्न बना हुवा है कि मैं कोशिश करूंगा तो रोज़ी मिलेगी, ह़-र-कत में ब-र-कत है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर एक की मग़्फ़िरत का ज़िम्मा नहीं लिया मगर.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर एक जानदार की रोज़ी अपने ज़िम्मए करम पर ले ली है मगर याद रखिये ! हर किसी मुसल्मान के ईमान की हिफ़ाज़त या बे हिसाब मग़्फ़िरत का ज़िम्मा नहीं लिया मगर फिर भी रोज़ी ही की फ़िक्र लगी हुई है, ईमान की हिफ़ाज़त और बे हिसाब मग़्फ़िरत की तलब के लिये किसी क़िस्म की हिलजुल नहीं शायद इस लिये कि आज बहुत से लोगों के दिल सख़्त हो चुके हैं लिहाज़ा दुन्या की ख़ातिर सख़्तियां बरदाश्त कर लेते हैं, दुन्या कमाने के लिये रोज़ाना आठ, दस, बल्कि बारह घन्टे तक कोल्हू के बैल की तरह फिरने के लिये तय्यार हैं। हाए सद करोड़ अफ़्सोस ! ईमान की हिफ़ाज़त व बे हिसाब मग़्फ़िरत की तलब में माहाना सिर्फ़ तीन दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की भी अगर दर-ख़्वास्त की जाए तो येह कह कर ठुकरा दिया जाता है कि हमारे पास वक़्त नहीं। مَعَاذَاللّٰه गोया ज़बाने हाल से कहा जा रहा है :

नफ़्सो शैतान ने बद मस्त किया भाई है
हम न सुधरे हैं, न सुधरेंगे, क़सम खाई है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है

यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर सबब के महज़ अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाने पर क़ादिर है। मगर उस की बे नियाज़ी से डरना ज़रूरी है, कि किसी एक गुनाह पर गिरिफ़्त फ़रमा कर जहन्नम में भी झोंक सकता है। "**मुस्नदे इमाम अहमद बिन हम्बल**" में **अल्लाहु रब्बुल इबाद** عَزَّوَجَلَّ का मुबारक इर्शाद नक़्ल किया गया है : "येह लोग जन्नत में जाएं तब भी मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं और येह

जहन्नम में जाएं तब भी मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं ।" (مسند امام احمد بن حنبل ج٦ ص٢٠٥ رقم١٧٦٧٦ دار الفکر بیروت) लिहाज़ा हमें जहन्नम से अपने आप को बचाने और जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला पाने के लिये येह ज़ेह्न बनाना होगा कि "**मैं सुधरना चाहता हूं**" और इस के लिये अपने अन्दर **ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्तफ़ा** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم पैदा करने की भरपूर कोशिश करनी होगी । **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की इनायत से हम गुनाहों से बचेंगे और नमाज़ों और सुन्नतों की पाबन्दी करेंगे, **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करेंगे, रोज़ाना रात "**फ़िक्रे मदीना**" कहते हुए "**म-दनी इन्आमात**" का रिसाला पुर करेंगे और फिर हर माह अपने यहां के "ज़िम्मादार" को जम्अ़ करवाएंगे तो ब फ़ज़्ले ख़ुदा ब वसीलए मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم **जहन्नम** से बच कर दाख़िले **जन्नत** होंगे जो कि अस्ल काम्याबी है । जैसा कि पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 185 में **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ
तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा ।

सुधरने के लिये तौबा कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बहर ह़ाल, उस की रह़मत से मायूस भी न होना चाहिये और उस की बे नियाज़ी से ग़ाफ़िल भी नहीं रहना चाहिये । और **ख़ुद को सुधारने** के लिये हर दम कोशिश जारी रखनी चाहिये । मैं उम्मीद करता हूं कि हम में से हर मुसल्मान की ख़्वाहिश है कि **मैं सुधरना चाहता हूं,** तो जो वाक़ेई सुधरना चाहते हैं वोह अपने साबिक़ा गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा कर लें । बेशक **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ तौबा क़बूल करने वाला है । तरग़ीब के लिये तौबा के फ़ज़ाइल पर मब्नी **तीन अहादीसे मुबा-रका** आप के गोश गुज़ार करता हूं :-

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ﴿1﴾ "बन्दा जब अपने गुनाह का ए'तिराफ़ करता है फिर तौबा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है ।" (صَحِيحُ البُخارِيّ، ج٢ص١٩٩ حديث٢٦٦١ دارالكتب العلمية بيروت)

﴿2﴾ हदीसे क़ुदसी में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुनहगार हो सिवाए उस के जिसे मैं सलामती अ़ता करूं तो तुम में से जो येह जान ले कि मैं बख़्शने पर क़ादिर हूं फिर उस ने मुझ से मुआफ़ी मांगी तो मैं उसे बख़्श दूंगा और मुझे कुछ परवाह नहीं ।" (مِشْكاةُ الْمَصَابِيح، ج٢ ص٤٣٩ حديث٢٣٥٠ دارالكتب العلمية بيروت)

﴿3﴾ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो इस तरह दुआ करे : **اَللّٰهُمَّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَكَ عَمِلْتُ سُوْءًا اَوْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ.** या'नी "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तेरी ज़ात पाक है, मैं ने बुरे आ'माल किये और अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया, मुझे बख़्श दे क्यूं कि तेरे सिवा कोई बख़्शने वाला नहीं ।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मैं इस के गुनाह बख़्श देता हूं अगर्चे वोह च्यूंटियों की ता'दाद के बराबर हों ।"

(كنز العُمّال ج٢ص٢٨٧ رقم ٥٠٤٩ دارالكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अच्छी अच्छी निय्यतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तबा-र-क व तआला आप सब की तौबा क़बूल फ़रमाए, आप सब का ईमान सलामत रखे, आप को बार बार हज नसीब फ़रमाए, बार बार गुम्बदे ख़ज़रा दिखाए, मुख़्लिस **आशिक़े रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बनाए और येह तमाम दुआएं मुझ

पापी व बदकार, **गुनहगारों के सरदार** के हक़ में भी क़बूल फ़रमाए। हिम्मत कीजिये और आज से तै कर लीजिये : **''मैं सुधरना चाहता हूं''** लिहाज़ा अब मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी...اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ, **र-मज़ानुल मुबारक** का कोई **रोज़ा** क़ज़ा नहीं होगा...اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ, **फ़िल्में डिरामे** नहीं देखूंगा...اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ, **गाने बाजे** नहीं सुनूंगा...اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ, **दाढ़ी** नहीं मुंडाऊंगा...اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ, दाढ़ी को **एक मुट्ठी** से नहीं घटाऊंगा...اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में हर माह तीन दिन सफ़र किया करूंगा...اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ, रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए हर माह **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर करूंगा और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ तक अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवा दिया करूंगा...اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ।

इलाही रहम फ़रमा मैं सुधरना चाहता हूं अब
नबी का तुझ को सदक़ा मैं सुधरना चाहता हूं अब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की तरफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत,** मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **महब्बत** की उस ने मुझ से **महब्बत** की और जिस ने मुझ से **महब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح، ج۱ ص۵۵، حديث ۱۷۵، دارالكتب العلمية بيروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

''इस्मिद'' के चार हुरूफ़ की निस्बत से सुरमा लगाने के 4 म-दनी फूल

《1》 **सु-नने** इब्ने माजह की रिवायत में है ''तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा ''इस्मिद'' है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।'' (سنن ابن ماجه، ج٤ ص ١١٥ حديث ٣٤٩٧) 《2》 पथ्थर का सुरमा इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या'नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मक्रूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं (فتاوٰی عالمگیری ج٥، ص٣٥٩) 《3》 सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 180) 《4》 सुरमा इस्ति'माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : (1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां (2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उलटी) में दो, (3) तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइये । (انظر:شُعَبُ الْإيمان، ج٥ ص٢١٨-٢١٩ دارالكتب العلمية بيروت) इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَ اللّٰه तीनों पर अ़मल होता रहेगा **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** तक्रीम के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाइये फिर बाईं आंख में। **सुरमे की सुन्नतों के बारे में** तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने और दीगर सेंकड़ों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 120 सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

इस्लामी के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

फ़ेहरिस

उ़न्वान	नम्बर	उ़न्वान	नम्बर
निफ़ाक़ व नार से नजात	1	सांस की माला	15
जन्नत चाहिये या दोज़ख़ ?	2	बे अ़मल बे वुक़ूफ़ होता है	15
आख़िरत की तय्यारी	3	जहन्नम के दरवाज़े पर नाम	16
रोशन मुस्तक़्बिल	4	नादानी की इन्तिहा	18
अनोखा ह़िसाब	5	मग़्फ़िरत की तमन्ना कब ह़माक़त है ?	18
एह़सासे नदामत है न ख़ौफ़े आ़क़िबत	5	जव बो कर गन्दुम काटने की उम्मीद ह़माक़त	19
बचपन की ख़त़ा याद आ गई !	6	जहन्नम का बीज बो कर जन्नत	
बचपन के गुनाह को याद रखने		की खेती का इन्तिज़ार !	20
का निराला अन्दाज़	7	मुसीबत बाइ़से इ़ब्रत है	20
नाक़िस नेकियों पर इतराना	7	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रोज़ी देने वाला है	
नेकी कर के भूल जाओ	8	फिर भी.....	21
आज ''क्या क्या'' किया ?	8	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हर एक की मग़्फ़िरत	
फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की आ़जिज़ी	8	का ज़िम्मा नहीं लिया मगर.....	22
क़ियामत से पहले ह़िसाब	9	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है	22
मुह़ा-सबा किसे कहते हैं	10	सुधरने के लिये तौबा कर लीजिये	23
चराग़ पर अंगूठा	11	अच्छी अच्छी निय्यतें	24
कभी ऊपर न देखूंगा	11	''इस्मिद'' के चार हुरूफ़ की निस्बत	
अगर जन्नत से रोक दिया गया तो !	12	से सुरमा लगाने के 4 म-दनी फूल	26
हथ-कड़ियां और बेड़ियां	14		

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती है, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजितमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़त्ताहे दारैन मस्जिद, ज़ाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुद्दोल कोम्पलेक्स, A.J. मुद्दोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, ज़ी कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net